Astro PDF.com

GET HOROSCOPE IN PDF

SPECIALIZED IN YOUR LOCAL LANGUAGE

www.astropdf.com

support@astropdf.com

(+91) 8143 - 816797

SoulMate Report

लिंग	: स्त्री	लिंग	: पुरुष
नाम	: Anushka Sharma	नाम	: Virat Kohli
जन्म नक्षत्र	: स्वाति	जन्म नक्षत्र	: उत्तर फालगुनी
जन्म तिथि	: 1 मई, 1988	जन्म तिथि	: 5 नवम्बर, 1988
जन्म समय	: 12:00:00 PM	जन्म समय	: 10:28:00 AM

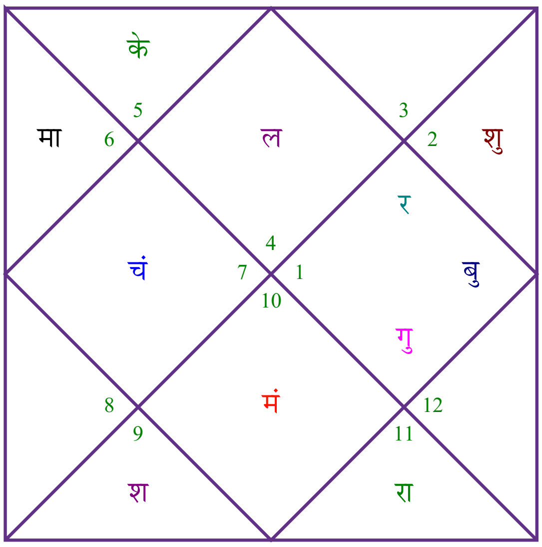

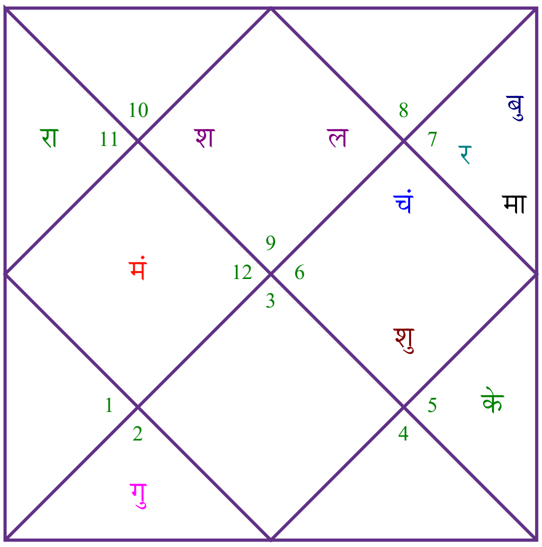

जन्म नक्षत्रों का ताल-मेल।

कूट्ट का नाम	मिली गयी अंख	अधिकतम अंख
वर्ण	1	1
वश्य	1	2
तारा	1	3
योनि	3	4
ग्रहमैत्री	5	5
गण	5	6
भकूट्ट (राशि समूह था राशि कूट्ट)	0	7
नाडी	8	8
सभी मिलाकार	24	36

जन्म नक्षत्रों में श्रेष्ठ प्रकार से ताल-मेल है। (उत्तम)
नक्षत्र ताल-मेल की गणना = 67.0%

अन्य कारक

महेन्द्र कूट्ट	उत्तम
स्त्री दीर्घ कूट्ट	उत्तम
रज्जू दोश	दोष मुक्त
वेद दोष	दोष मुक्त

मंगल दोष विवरण

जन्मपत्रिका में मंगल का प्रभाव महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वैवाहिक जीवन में, जीवनसाथिओं के बीच का ताल-मेल मंगल के प्रभाव से बना रहता है। साधारण, एक खास प्रकार की मान्यता प्रचलित है कि जन्मकुडंली में जब मंगल सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगल का कारण बनता है। अनेक ग्रंथों में शास्त्रोक्त विवरणों से पता चलता है कि अनेक कारणों को लेकर मंगल के अशुभ प्रभाव से मुक्त रहा जा सकता हैं। इसका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया गया है।

मंगल के शुभ-अशुभ प्रभाव, लग्न स्थान की अपेक्षा से गणना की जाती है।

लडकी की मंगल सातवाँ भाव में है। : तीव्र बुरि असर
इस जन्मपत्रिका में मंगल बलवंत रहा है और रुचकयोग के कारण मंगल अशुभ प्रभाव से मुक्त रहा है।
लडके का मंगल चौथा भाव में है। : अंशिक प्रभाव प्रकट करनेवाला है।

लडकी की जन्मपत्रीका में, लडके के राशीचक्र की तुलना में मंगल दोष कम दिखाई पडता है।

चंन्द्र की अपेक्षा मंगलदोष की तुलना।

लडकी की मंगल चौथा भाव में है। : अंशिक प्रभाव प्रकट करनेवाला है।
इस जन्मपत्रिका में मंगल बलवंत रहा है और रुचकयोग के कारण मंगल अशुभ प्रभाव से मुक्त रहा है।
लडके का मंगल सातवाँ भाव में है। : तीव्र बुरि असर

लडकी की जन्मपत्रीका में, लडके के राशीचक्र की तुलना में मंगल दोष कम दिखाई पडता है।

शुक्र की उपस्थिति से मंगल दोष की तुलना।

लडकी की मंगल नवमा भाव में है। : दोष मुक्त

लडके का मंगल सातवाँ भाव में है। : तीव्र बुरि असर

लडकी की जन्मपत्रीका में, लडके के राशीचक्र की तुलना में मंगल दोष कम दिखाई पडता है।

मंगलदोष की संक्षिप्त जानकारी।

अवलंबित	फल
लग्न	कन्या की मंगलदोष को कम कर रहा है।
चन्द्र	कन्या की मंगलदोष को कम कर रहा है।
शुक्र	कन्या की मंगलदोष कम हो रहा है।

मंगलदोष के कारण जन्मपत्रिकाओं के बीच तालमेल संतोषजन्य नहीं माना जाता है।

पाप साम्यता

बुध, शनि, राहू, केतु और सूर्य लग्नस्थान की अपेक्षा से और चंन्द्र तथा शुक्र के स्थान की अपेक्षा से गुण-दोष फलों का समीकरण किया गया है।

यहाँ प्रयोग की गयी विधि समान बिंदु - समान भार (1-1-1)

लड़की के कुंडली के पाप अंक

	लग्न से		चन्द्र से		शुक्र से	
	स्थिति	पाप	स्थिति	पाप	स्थिति	पाप
मंगल	7	1.0	4	1.0	9	0.0
शनि	6	0.0	3	0.0	8	1.0
रवि	10	0.0	7	1.0	12	1.0
राहु	8	1.0	5	0.0	10	0.0
सभी मिलाकार		2.0		2.0		2.0

लड़के की कुंडली के पाप अंक

	लग्न से		चन्द्र से		शुक्र से	
	स्थिति	पाप	स्थिति	पाप	स्थिति	पाप
मंगल	4	1.0	7	1.0	7	1.0
शनि	1	1.0	4	1.0	4	1.0
रवि	11	0.0	2	1.0	2	1.0
राहु	3	0.0	6	0.0	6	0.0
सभी मिलाकार		2.0		3.0		3.0

पाप साम्यता फलों से संपूर्ण मुक्त स्थिति।

दशा सन्धी की जाँच।

कन्या की जन्म तिथि। 1-5-1988

जन्म के वक्त दशा की समतुलना राहु 15 साल, 0 महीना, 3 दिन.

लडके का जन्म तिथि 5-11-1988

जन्म के वक्त दशा की समतुलना रवि 4 साल, 4 महीना, 6 दिन.

राहू दशा की समाप्ती 13-03-2028

महत्वपूर्ण दशा सन्धी इस जन्म पत्रिका में नहीं दिखाई देती। यह एक श्रेष्ट संकेत है।

संक्षिप्त और सिफारस।

जाँच	फल	टिप्पणी
जन्म नक्षत्रों का ताल-मेल।	उत्तम	कूट्ट मिलन की पध्दति प्रयुक्त किया गया है।
मंगल दोष विवरण	असंतृप्त	
पाप साम्यता	उत्तम	समान बिंदु - समान भार (1-1-1)
दशा सन्धी की जाँच।	संतोषजनक	

मंगल दोष से पूरी तरह मुक्त नही है फिर भी पापसाम्यता की दृष्टि से

ताल-मेल कुछ हद तक संतोषजनक रहेंगा।

पुरुष और स्त्री के नक्षत्रों के बीच रहे सुमेल के आधार पर ' गुणमिलन पध्धति ' से सहायोग का मुल्यांकन :-

1984 से लेकर आस्ट्रो - विज़न भारतीय आसट्रोलजी को कम्प्यूटर सोफट्वेयर के ध्दारा लोगें तक पहुँचाने का मार्ग दशर्क बन गया है । ' सोलमेट्ट ', शादी के मिलाव को निर्णय करने वाला सोफट्वेयर है जो भारत के विभिन्न भागें में की गई विस्तारपूर्वक पढाई के आधार पर प्रस्तुत किया गया है । ऐसे देखा जाता है कि शदि के मिलाव को निर्णय करने वाला मूल नियम (व्यवस्था) एक जैसे है लेकिन अलग जगहो में प्रयोग करने वाली रीतियों में परिवर्तन है । इस के अलावा आविषकारों के बीच असट्रोलजी के अनोके व्यवस्थाओं के बारे में भिन्न भिन्न राय है । लोगे ध्दारा स्वीकार किए गए पंज़ागे और ग्रन्थों में बहुत से गलती दिखाई पडता है और बहुत से ग्रन्थकार अपने व्यक्तिगत रायों को मिलाकर शास्त्र तत्वों को उल्टा पलटा करके लोगे के सामने प्रस्तुत करता है । विभिन्न देशें में प्रयोग करने वाले शैलियों की तुलना और मूल ग्रन्थों में प्रस्तुत श्लोंको को गहराई से जाँच करने के बाद ही आस्ट्रो विज़न ने सोलमेयट्ट सोफट्वेयर का विकास किया है । भिन्न प्रान्तों के व्यवहारों को प्रधान करने वाले अनेक अनुवाधों को इस में प्रस्तुत किया गया है । ' गुणमिलान ' रीति के अनुसार जन्म नक्षत्रों को चुनकर आठ गुण कूट्ट की जाँच किया जाता है और तुल्य अंग दिया जाता है । 36 गुण में से कम से कम 18 अंक उपस्थित है तो उस मिलाव को उचित माना जाता है । आठ कूट्ट के अलावा चार और कूट्ट को प्रस्तुत किया गया है । 'कूट्ट' (अलग - अलग महत्वपूर्ण विक्षय) का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है ।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।

गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिका:

मुहुर्त चिन्तामणी के अनुसार: वर्ण, वश्या, तारा, योनी, गृह मैत्री, गण मैत्री, भकूट्ट और नाडी आठ प्रकार के महत्वपूर्ण कूट्ट है । हर एक विक्षय अगले दिये गये विक्षायों से ज्यादा महत्व रखते हैं ।

वर्ण कूट्ट (वर्णा का समुह)

सभी राशीयों को चार (विभागों में) समुह में विभाजित किया है

वर्ण	राशी
ब्राहमिण	कर्कराशी, व्रुषचिक् राशी, मीन राशी
क्षत्रिय	मेषराशी, सिंहराशी, धनुराशी
वैश्य	व्रषभ राशी, कन्याराशी, और मकर राशी
शूद्रा	मिथुन राशी, तुलाराशी, और कुंभ राशी

पुरुष का वर्ण महिला के वर्ण के बराबर (समान) था उच्य होना चाहिए । इस विभाग को ' एक अंक ' प्रदान किया जाता है ।

वैश्य कट्ट

वैश्य कूट्ट पुरुष और स्त्री के नक्षत्रों के बीच रहे आकर्षण को सूचित करता है । पति पन्ति के परस्पर अधिकार को यह कूट्ट सूचित करता है । हर राशी की वैश्याराशी इस प्रकार है

राशी	वैश्याराशी
मेष	सिंह, व्रृशचिक्
वृषभ	कर्क, तुला
मिथुन	कन्या
कर्क	व्रृशचिक्, धनु
सिंह	तुला
कन्या	मीन, मिदुन
तुला	मकर, कन्या
वृश्चिक	कर्क
धनु	मीन
मकर	मेष, कुंभ
कुंभ	मेष
मीन	मकर

यदि लडकी की राशी लडके का वैश्य राशी रहती है या लडके का राशी लडकी की वैश्या राशी है तो वैश्य कूट्ट को श्रेष्ठ माना जाता है । इस मिलाव को दो अंक प्रदान किये जाते हैं ।

तारा कूट्ट

लडकी के जन्म नक्षत्र से लडके के नक्षत्र को गिना जाये और जो अंक प्राप्त होता है उसे 9-से विभाजीत किया जाये । इस प्रकार विभाजित करने से शेष अंक 3, 5, या 7 हो तो इसे अशुभ माना जाता है । अन्यथा इसे ' दो ' अंक दिये जाते हैं । इसी प्रकार लडके के जन्म नक्षत्र से लडकी के नक्षत्र को गिना जाये और जो अंक मिले उसे 9 - से विभजीत किया जाये । इस प्रकार विभाजित करने से शेष अंक 3,5 या 7 हो तो इसे अशुभ माना जाता है । अन्यथा इसे ' एक ' अंक दिया जाता है । (नोंध : ' मुहुर्त चिन्तामणी ' में स्पष्टरुप से बताया गया है कि जब भी नक्षत्रों की गिनती था जाँच की जाती है तो लडकी की जन्म पत्रिका को लडके के जन्म पत्रिका से मिलाया जाये और इसी प्रकार लडके की जन्म पत्रीका को लडकी के जन्म पत्रीका से मिलाया जाये । दक्षिण भारत में सिर्फ लडकी की जन्म पत्रीका लडके के जन्म पत्रीका से मिलाते है और ताल मेल की जाँच की जाती है । इस कारण को नज़र में रखते हुए ' आस्ट्रो विज़न सोलमेट्ट ' में दोनो ताल - मेल को महत्व दिया गया है । इस कारण से प्रथम श्रेणी को दो अंक और दूसरी श्रेणी को एक अंक प्रदान किया जाता है ।)

योनी कूट्ट (योनी का समूह)

हर नक्षत्र को अलग - अलग प्राणियों की योनी का प्रतीक माना गया है । नर और नारी दोनों की योनी के बीच शत्रुभाव नहीं होना चाहिएँ । जो योनी समानता के रुप मे होती है तो उसे 4 - अंक दिये जाते हैं, और जो दोनों के बीच मित्रभाव रहत है तो 3 - अंक और निषपक्ष भाव अभिव्यक्त करती है तो 2 - अंक दिये जाते है। शत्रुभाव की योनियों को 1 - अंक प्रदान किया जाता है और तीव्र शत्रुता की उपस्थिति में कोइ भी अंक नहीं दिये जाते । (दक्षिण के कई प्रांतों मे, ज्यादातर केरल राज्य में (पुरुष और स्त्री) दोनों के योनियों को प्राणियों के संबन्ध से ज्यादा महत्व दिया गया है । यहाँ 'गुणमिलन प्रणाली में ' इस तत्व को शमिल नहीं किया है) योनी कूट्ट (समूह) विवाह के लौगिक संबन्धो को सूचित करता है ।

गृह मैत्री कूट्ट

राशीओं के अधिपतिओं के बीच रहे संबन्धों का सूक्ष्म रुप से अध्ययन किया गया है । गृहों के बीच रहे संबन्धों को मैत्रीभाव, निक्षपष भाव और शत्रुभाव के स्थान पर अलग - अलग रुप से, समझा गया है । नर और नारी का देव समानरुप से अदवा आपस में मैत्री भाव प्रदर्शित करते हैं तो ज्यादा से ज्यादा 5 -अंक प्रदान किये जाते हैं । आपस में शत्रुभाव उत्पन्त करने वाले परिस्थिति मैं कोई भी अंक नहीं दिये जाते हैं । इसे महत्वपूर्ण ' कूट्ट ' माना जाता है क्यों कि यह नर और नारी के मनोविज्ञानिक द्रष्टी से देखें तो मानसिक एकात्मकता को सूचित करती है ।

गणकूट

देवगण, मनुष्यगण (नर) और असुरगण (राक्षसगण) - इस प्रकार गणों को तीन विभागों से विभाजीत किया गया है । गणों के बीच रहे ताल - मेल के बारे में लोक - समूह के बीच भिन्न भिन्न राय हैं । यह तो सर्वसामान्य रुप से लोग सहमत हैं कि देव गुण धारण करने वाला नर अन्य देव गण वाली नारी से था देव गण वाली नारी मनुष्य गण वाले नर से विवाहित हो सकती है । देवगण वाली नारी असुर गण वाले नर से भी विवाह कर सकती है । तामिलनाडू प्रांत के लोग और ज्योतिष शास्त्रियों ने मनुष्य गण की नारी और असुर गण के नर के विवाह को मध्यमरुप का स्थान दिया है । ' आस्ट्रो विज़न ' ने 'मुहुर्त चिन्तामणी' में आलेखनीय तत्वों को ज्यादा महत्व दिया है और कुछ बदलाव के साथ अंको को प्रदान करने की विदी अपनाई है ।

स्त्री	पुरुष	अंक
देव	देव	6
	मनुष्य	5
	असुर	1
मनुष्य	देव	5
	मनुष्य	6
	असुर	1
असुर	देव	0
	मनुष्य	0
	असुर	6

नर नारी के संस्कार और मानासिक स्थिति के ताल मेल को यह कूट्ट सूचित करता है ।

भकूट्ट (राशि समूह था राशि कूट्ट)

स्त्री पुरुष के जन्मराशियों के स्थान या स्थिति के आधार पर भकूट्ट को व्यक्त किया जाता है । ' मुहुर्त चिन्तामणी के अनुसार स्त्री पुरुष का जन्मराशि 6/8, 5/9, था 2/12 में से एक है तो अशुभ माना जाता है । इस कारण इनको कोई अंक नहीं दिया जाता है । अन्यथा 7 - अंक प्रदान किये जाते हैं । इस व्यवस्था पर भिन्न प्रकार का राय उपस्थित है । कुछ ज्योतिश शात्रिओं का मानना है कि पुरुष का राशी स्त्री के राशी से (6) छे स्थान से भी ज्यादा है तो अशुभ फल को दुर्बल कर सकते है । इसके अलावा राशी के मालिक अधिपति समान हैं या आपस में मैत्री भाव रखते हैं तो भी अशुभ फल से संपूर्ण मुक्तावस्था उत्पन्न होता है । ' आस्ट्रो विज़न सोलमेट्ट ' सोफट्वेयर में भकूट्ट (राशि के समुह को) गंभीरता से देखा गया है और महत्वपूर्ण मर्म स्पर्शी बातों को लक्षय में रखते हुए ही वस्तुस्थिति को प्रस्तुत किया गया है ।

नाडि कूट्ट

जन्म नक्षत्रों को नाडि के तीन भागों में विभाजित किया गया है - वह है आदी, मध्य और अंत्य । स्त्री और पुरुष की नाडि अलग रहती है तो पुर्ण अंक यानी 8 - अंक प्रदान किये जाते हैं । दोनों की नाडि समान होने पर कोई अंक नहीं दिये जातें । यहाँ लेखक के मौलिक विचारधारा या अपवाद को महत्व नहीं दिया गया है । 'नाडिकूट्ट' को केरल में 'रज्जू' के नाम से जाना जाता है। पुरुष और स्त्री दोनों के नक्षत्रों में 'मध्यम' कूट्ट की उपस्थिति को अत्यंत अशुभ माना जाता है ।

महेन्द्र कूट्ट

महेन्द्र कूट्ट की उपस्थिति तब माना जाता है जब पुरुष का नक्षत्र स्त्री के नक्षत्र से गिनने पर 4,7,10,13,16,19,22 या 25 रहता है । यह अभिवृत्ति को सूचित करता है ।

स्त्री दीर्घ कूट्ट

जो लडके का जन्म नक्षत्र लडकी के नक्षत्र से - 9 के आगे रहता है और अंक 18 -से भी आगे रहता है तो उसे स्त्री दीर्घ कूट्ट के अनुसार श्रेष्ठ मिलन का कारण माना जा सकता है ।

रज्जू दोश

नक्षत्रों को रज्जू के पाँच समूह में बाँटा गया है । वह है पठ रज्जू , कटि रज्जू (तुडै रज्जू)), नाभी रज्जू (उदर रज्जू) कंठ रज्जू और सिरों रज्जू । स्त्री और पुरुष का रज्जू श्रेणी अलग - अलग बिभागों में होना जरुरी है । अन्यथा उसे रज्जू दोष माना जाता है । (इसे अशुभ मिलन के रुप में देखा जाता है)

वेद दोष

कुछ नक्षत्र का प्रभाव कुछ अन्य नक्षत्रों पर प्रभावित होता है । इस प्रकार नर और नारी के नक्षत्रों के बीच प्रभाव का होना वेद दोष की उपस्थिति को सूचित करता है । कुछ ज्योतिष शास्त्रि वेद दोष को ज्यादा महत्व देते हैं क्योंकि इस दोष के कारण आपस में अक्सर कलह उत्पन्न होने की संभावना है ।

With best wishes : ASTRO PDF
VIJAYAWADA

PoruthamCode :S3-K1-P1-D03-GA1BA1-GC0BC0

Version 12.0.0 Build 24 IAS_627913289214296080

*Note: This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report. All the longitude values are mentioned in Degree: Minute: Second format and time in Hour: Minute format.